PRIVATE CIRCULATION ONLY

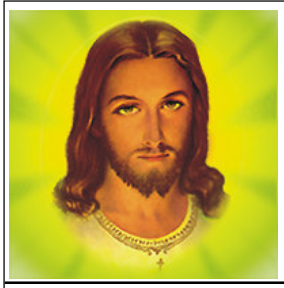

दिव्य ज्योति

अगस्त 2006 ISSUE 0806 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

कब और कैसे मिलीं हमें दस आज्ञाँए ?

पवित्र बाइबिल हमें पुराने विधान के निर्गमन ग्रन्थ व विधि–विवरण ग्रन्थ में दस आज्ञाओं के विषय में बताती है जिसे मूसा को ईश्वर ने होरेब (सीनई) पर्वत पर प्रदान की – सभी इस्राएलियों के लिए। पर प्रभु येशु के पुनरुत्थान के बाद भी हम सभी के लिए यह **दस नियम या आज्ञाँए या विधान या प्राकृतिक नियम** लागू होते हैं क्योंकि तब से लेकर अब तक न तो ईश्वर बदला है और न ही मनुष्य का स्वभाव (पाप की ओर झुकाव) या आचरण। पर यह आज्ञाँए, जो प्रत्येक मनुष्य का ईश्वर व अपने पड़ोसी के प्रति आचरण (प्रमुख रुप से प्रेम व श्रद्धा), निर्दिष्ट करती हैं, उस समय कैसे मिली, किस परिस्थिति में मिली, क्यों मिली, इत्यादि हम पवित्र बाईबिल से जान लें। आइये, इस विषय में हम पढ़ें–

विधान की प्रतिज्ञा

मिस्र देश से निकलने के ठीक तीन महीने बाद इस्राएली सीनई की मरुभूमि पहुँचे। वे रफीदीम से चले थे और उन्होंने सीनई की मरुभूमि पहुँच कर पहाड़ के सामने पड़ाव डाला। मूसा ईश्वर से मिलने के लिए पर्वत पर चढ़ा और ईश्वर ने वहाँ उस से कहा, "तुम याकूब के घराने से यह कहोगे और इस्राएल के पुत्रों को यह बता दोगे – तुम लोगों ने स्वयं देखा है कि मैंने मिस्र के सथा क्या–क्या किया और मैं किस तरह तुम लोगों को गरुड़ के पंखों पर बैठा कर यहाँ अपने पास ले आया। यदि तुम मेरी बात मानोगे और मेरे विधान के अनुसार चलोगे, तो तुम सब राष्ट्रों में से मेरी अपनी प्रजा बन जाओगे; क्योंकि समस्त पृथ्वी मेरी है। तुम मेरे लिए याजकों का राजवंश तथा पवित्र राष्ट्र बन जाओगे।" यही सन्देश इस्राएल के पुत्रों को सुनाओ।"

मूसा ने लौट कर प्रजा के नेताओं को बुलाया और जो कुछ प्रभु ने उस से कहा था, वह सब उनके सामने प्रस्तुत किया। सब लोगों ने एक स्वर से यह उत्तर दिया, "ईश्वर जो कुछ कहता है, हम वह सब पूरा करेंगे।" प्रभु ने मूसा से कहा, "मैं एक काले बादल में तुम्हारे पास आ रहा हूँ, जिससे ये लोग मुझे तुम्हारे साथ बातें करता हुआ सुनें और तुम में सदैव अटल विश्वास करें।" मूसा ने प्रभु को लोगों का उत्तर सुना दिया।

विधान की तैयारी

प्रभु ने मूसा से कहा, "तुम लोगों के पास जा कर आदेश दो कि**वे आज और कल अपने को पवित्र करें और अपने वस्त्र धो लें।**वे परसों के लिए अपने को तैयार करें, क्योंकि परसों प्रभु सभी लोगों के सामने सीनई पर्वत पर उतरेगा। तुम लोगों के लिए चारों तरफ एक सीमा निश्चित कर दोगे और उन से कहोगे, "ध्यान रखो, पर्वत पर कोई नहीं चढ़े और न उसकी तलहटी तक पहुँचे। जो पर्वत का स्पर्श करेगा, वह मारा जायेगा। कोई व्यक्ति दोषी का स्पर्श नहीं करेगा। वह पत्थरों या तीरों से मारा जायेगा। चाहे वह पशु हो, चाहे मनुष्य, वह जीवित नहीं रह सकेगा। जब नरसिंगे का शब्द बहुत देर तक सुनाई देगा, तब वे पहाड़ पर चढ़ सकेंगे।" इस पर मूसा पर्वत से उतर कर लोगों के पास आया और उन्हें पवित्र होने को कहा और उन्होंनें अपने कपड़े धो लिये। जब उसने लोगों से कहा, **"तीसरे दिन तैयार रहोगे।**स्त्री का स्पर्श नहीं करोगे।"

ईश्वर के दर्शन

तीसरे दिन प्रातःकाल बादल गरजे, बिजली चमकी, पर्वत पर काले बादल छा गये और तुरही का प्रचण्ड निनाद सुनाई पड़ा – शिविर में सभी लोग काँपने लगे। तब मूसा ईश्वर से भेंट करने के लिए लोगों को शिविर से बाहर ले गया और वे पहाड़ के नीचे खड़े हो गये। सीनई पर्वत धूएँ से ढका हुआ था क्योंकि ईश्वर अग्नि के रुप में उस पर उतरा था। धूआँ भट्ठी के धूँए की तरह ऊपर उठा रहा था और सारा पहाड़ ज़ोर से काँप रहा था। तुरही का निनाद बढ़ता जा रहा था। मूसा बोला और ईश्वर ने उसे मेघगर्जन में से उत्तर दिया। ईश्वर सीनई पर्वत की चोटी पर उतरा और उसने मूसा को पर्वत की चोटी पर बुलाया और मूसा ऊपर गया।

प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी, "नीचे जा कर लोगों को चेतावनी दो कि वे प्रभु के दर्शन

स्वर्ग में उद्ग्रहित रानी, माँ मरियम से एक लघु प्रार्थना

हे निष्कलंक, अति पवित्र धन्य कुँवारी माँ, स्वर्ग और पृथ्वी की महारानी! तूने पिता परमेश्वर पर विश्वास रख, पुत्र प्रभु येशु से प्रेम रख, पवित्र आत्मा का साहचर्य रख अपने जीवन को, अंतिम क्षणों तक पाप व बुराई से वंचित रख, ईश्वर के हाथों में समर्पित किया था और अपने प्रेम, विश्वास आशा, आज्ञाकरिता, विनम्रता, त्याग, पवित्रता, सेवा इत्यादि सद्गुणों द्वारा मृत्योपरान्त शरीर और आत्मा सहित ईश्वर कृपा से स्वर्ग में उद्ग्रहित की गई और स्वर्ग और पृथ्वी की रानी बनी। हे कृपाओं की माँ! हमारी मध्यस्थ और अधिवक्ता, हमारे लिए अपने प्रिय पुत्र से प्रार्थना कर कि हम भी तेरे सद्गुणों को प्राप्त करें, ईश्वर की महिमा के लिए अपना जीवन समर्पित कर तेरे पुत्र के स्वर्गराज्य में प्रवेश पा सकें तथा तेरे और सब सन्तों के साथ उसे अनन्त काल तक स्तुति, सम्मान व महिमा दे सकें। आमेन।

"आकाशमें एक महान् चिन्ह दिखाई दिया, सूर्य का वस्त्र ओढ़े एक महिला दिखाई पड़ी। उसके पैरों तले चन्द्रमा था और उसके सिर पर बारह नक्षत्रों का मुकुट।"(प्रकाशना12:1)

करने के लिए आगे नहीं बढ़ें, नहीं तो उनमें बहुतों की मृत्यु हो जायेगी। वे याजक भी, जो प्रभु के पास आया करते हैं, अपने को पवित्र कर लें, जिससे ईश्वर उन पर क्रोध न करे।" मूसा ने प्रभु से कहा, "लोग सीनई पर्वत पर नहीं आ सकते क्योंकि तूने स्वयं हम लोगों को कड़ी चेतावनी दी कि पर्वत के चारों ओर एक सीमा बनाकर उसे पवित्र बनाये रखो।" तब प्रभु ने उस से कहा, "नीचे जाओ और हारुन को ले कर फिर ऊपर आ जाओ। लेकिन याजक और लोग प्रभु के पास पहुँचने के लिए ऊपर नहीं आयें। कहीं वह उन पर क्रोध न करे।" इस पर मूसा लोगों के पास नीचे गया और उसने उन्हें यह बात समझायी।

ईश्वर की दस आज्ञाँए

1. ईश्वर ने मूसा से यह सब कहा, ***"मैं प्रभु, तुम्हारा ईश्वर हूँ। मैं तुम को मिस्र देश से, गुलामी के घर से, निकाल लाया। मेरे सिवा तुम्हारा कोई ईश्वर नहीं होगा।***

"अपने लिए कोई देवमूर्ति मत बनाओ। ऊपर आकाश में या नीचे पृथ्वीतल पर या पृथ्वी के नीचे जल में रहने वाले किसी भी प्राणी अथवा वस्तु का चित्र मत बनाओ। उन मूर्तियों को दण्डवत् कर उनकी पूजा मत करो, क्योंकि मैं प्रभु, तुम्हारा ईश्वर, ऐसी बातें सहन नहीं करता। जो मुझ से बैर करते हैं, मैं तीसरी और चौथी पीढ़ी तक उनकी सन्तति को उनके अपराधों का दण्ड देता हूँ। जो मुझे प्यार करते हैं, मैं हज़ार पीढ़ियों तक उन पर दया करता हूँ। 2. ***प्रभु अपने ईश्वर का नाम व्यर्थ मत लो,*** क्योंकि जो व्यर्थ ही प्रभु का नाम लेता है, प्रभु उसे अवश्य दण्डित करेगा। 3. ***विश्राम-दिवस को पवित्र मानने का ध्यान रखो।*** तुम छः दिनों तक परिश्रम करते रहो और अपना सब काम करो, परन्तु सातवाँ दिन तुम्हारे प्रभु–ईश्वर के आदर में विश्राम का दिन है। उस दिन न तो तुम कोई काम करो, न तुम्हारा पुत्र, न तुम्हारी पुत्री, न तुम्हारा नौकर, न तुम्हारी नौकरानी, न तुम्हारे चौपाये और न तुम्हारे शहर में रहने वाला परदेशी। छः दिनों में प्रभु ने आकाश, पृथ्वी, समुद्र और उन में जो कुछ है, वह सब बनाया है और उसने सातवें दिन विश्राम किया। इसलिए प्रभु ने विश्राम–दिवस को आशीष दी है और उसे पवित्र ठहराया है।4.***अपने माता-पिता का आदर करो,*** जिससे तुम बहुत दिनों तक उस भूमि पर जीते रहो, जिसे तुम्हारा प्रभु–ईश्वर तुम्हें प्रदान करेगा।

5.***हत्या मत करो।*** 6.***व्यभिचार मत करो।*** 7.***चोरी मत करो।*** 8.***अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही मत दो।*** 9.***अपने पड़ोसी के घर-बार का लालच मत करो।*** 10.***न तो अपने पड़ोसी की पत्नी का, न उसके नौकर अथवा नौकरानी का न उसके बैल अथवा गधे का - उसकी किसी भी चीज का लालच मत करो।"***

जब सब लोगों ने ***बादलों का गर्जन, बिजलियाँ, नरसिंगे की आवाज़ और पर्वत से निकलता हुआ धुआँ*** देखा, तो वे भयभीत हो कर काँपने लगे। वे कुछ दूरी पर खड़े रहे और मूसा से कहने लगे, "आप हम से बोलिए और हम आपकी बात सुनेंगे, ***किन्तु ईश्वर हम स नहीं बोले, नहीं तो हम मर जायेंगे।"*** मूसा ने लोगों को उत्तर दिया, "***डरो मत*** : क्योंकि ईश्वर तो तुम्हारी परीक्षा लेने आया है, जिससे तुम्हारे मन में उसके प्रति श्रद्धा बनी रहे और तुम पाप न करो।" लोग दूर ही खड़े रहे, परन्तु मूसा उस सघन बादल के पास पहुँचा, जिस में ईश्वर था।

(निर्गमन 19:1-20:21)

क्या आप सचमुच स्वतन्त्र हैं ?

यह प्रश्न आज़ादी का है, पर सिर्फ ***भौतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक, राजनैतिक, धार्मिक या मौलिक*** आज़ादी का ही नहीं, ***आध्यात्मिक*** आज़ादी का है। चाहे देखने में हम आज़ाद हो हमारा सारा देश आज़ाद हों, सारी मानवजाति आज़ाद हो पर सम्पूर्ण मानवजाति कल भी गुलाम था और आज भी गुलाम है–***बुराई का, पाप का, अंधकारमयी शक्तियों का।*** इस वर्ष अगस्त 15 को हमारे देश की आज़ादी की 59वीं वर्षगाँठ मनाई गई। हम याद रखें कि इस आज़ादी को भी प्राप्त करने के लिए, जो आध्यात्मिक नहीं पर भौतिक है, हज़ारों को अपने जीवन में संघर्ष करना पड़ा, अपने रक्त को बहाना पड़ा, अपना जीवन तक न्यौछावर करना पड़ा। तो उस आज़ादी के लिए, जो आध्यात्मिक है और जो उसके इस जीवन व आने वाले जीवन से सम्बन्धित है, क्या कुछ संघर्ष व त्याग नहीं करना पड़ेगा। ज़रा सोचें! हम अभी पूरी तरह आज़ाद नहीं हुए, पर आज़ाद दिखते हैं। पवित्र बाइबिल हमसे यही कहती है, "सब, चाहे यहूदी हों या यूनानी, (गैर–यहूदी) पाप के अधीन हैं, जैसा कि लिखा है–कोई भी धार्मिक नहीं रहा–एक भी नहीं, कोई भी समझदार नहीं; ईश्वर की खोज में लगा रहने वाला कोई नहीं ! सभी भटक गये, सब समान रुप से भ्रष्ट हो गये हैं। कोई भी भलाई नहीं करता–एक भी नहीं।"

उनका गला खुली हुई क़ब्र है (अभिशाप, आरोप, गाली–गलौच, झूठ, धोखा, चुगली, निन्दा, उपहास इत्यादि मुँह से निकलते हैं); उनकी वाणी में छल–कपट और उनके होठों के तले साँप का विष है। उनका मुँह अभिशाप और कुटता से भरा है। उनके पैर रक्तपात करने दौड़ते हैं, उनके मार्ग में विनाश है और विपत्ति। वे शान्ति का मार्ग नहीं जानते और ईश्वर की श्रद्धा उनकी आँखों के सामने नहीं रहती।" ***(रोमियों 3:9-18)***

इन्हीं सब कारणों से इस संसार की हालत खस्ता है, जीना मुश्किल, जीवन खतरनाक, संघर्षपूर्ण, अशान्त व पीड़ादायक है और हृदय कटुता, बैर, ईष्या, क्रोध, देष इत्यादि बुराईयों से भर जाता है। और सभी बुराई मन से आती व मुँह से निकलती है और मनुष्य को अशुद्ध करती है। यह ईश्वर की पवित्रता से उसे दूर ले जाती है। ***(पढ़ें मत्ती 15:18-19)*** इस प्रकार कोई कुछ नहीं कह सकता और ईश्वर के सामने समस्त संसार दण्ड के योग्य माना जाता है ***(रोमियों 3:19)*** किसी को अपने पर गर्व करने का अधिकार नहीं रहा ***(रोमियों 3:27)*** पाप आदि मानव आदम से शुरु होता है। ईश्वर की आज्ञा के उल्लघंन द्वारा और उसी के अपराध के फलस्वरुप ***मृत्यु का राज्य*** प्रारम्भ हुआ। ***(रोमियों 5:17)*** और मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब पापी हैं।

(रोमियों 5:12, 14)

ईश्वर ने मूसा के द्वारा हमें दस नियम दिये, संहिता की शिक्षा दी, जो हमें पाप का ज्ञान कराती और मनुष्य को दोषी ठहराती है पर संहिता मनुष्य को पाप से मुक्त कराने में असमर्थ थी। जैसे कि सन्त पौलुस भी कहते हैं,

"हम जानते है कि संहिता आध्यात्मिक है, किन्तु मैं प्राकृतिक और पाप का दास हूँ, मैं अपना ही आचरण नहीं समझता हूँ, क्योंकि मैं जो करना चाहता हूँ, वह नहीं, बल्कि वही करता हूँ, जिस से मैं घृणा करता हूँ। यदि मैं वही करता जौ मैं करना नहीं चाहता, तो मैं संहिता से सहमत हूँ और उसे कल्याणकारी समझता हूँ; किन्तु मैं कर्ता नहीं रहा, बल्कि कर्ता है –मुझमें निवास करने वाला पाप।... इस प्रकार मेरा अनुभव यह है कि जब मैं भलाई की इच्छा करता हूँ, तो बुराई ही कर पाता हूँ। मेरा अन्तरतम ईश्वर के नियम पर मुग्ध है, किन्तु मैं अपने शरीर में एक अन्य नियम का अनुभव करता हूँ, जो मेरे आध्यात्मिक स्वभाव से संघर्ष करता है और मुझे पाप के उस नियम के अधीन करता है, जो मेरे शरीर में विद्यमान है। मैं कितना अभागा मनुष्य हूँ! इस मृत्यु के अधीन रहने वाले शरीर से मुझे कौन मुक्त करेगा ?"

क्या आप इसका उत्तर जानते हैं ? वो केवल एक ही व्यक्ति हैं, जो स्वर्ग से उतरे और एक ही समय में पूर्ण मनुष्य और पूर्ण ईश्वर थे– ***प्रभु येशु मसीह।*** वही आप को हर बँधन व अधीनता से मुक्त कर सकते हैं जैसे पौलुस (अगले वाक्यांश में) कहते हैं –

"ईश्वर ही! हमारे प्रभु येशु मसीह के

"जिस तरह सब मनुष्य आदम के कारण मरते हैं, उसी तरह सब मसीह के कारण पुनर्जीवित किये जायेंगे-सब अपने क्रम के अनुसार, सबसे पहले मसीह और बाद में उनके पुनरागमन के समय वे, जो मसीह के बन गये हैं।" (1कुरिन्थि.15:22-23)

द्वारा " और वह कैसे ? क्योंकि "उसने पापी मनुष्य के सदृश शरीर धारण किया जिससे वह निष्कलंक रहकर सबके पापों का प्रायश्चित कर सकें। इस प्रकार ईश्वर ने मानव शरीर में पाप को दण्डित किया है, जिससे हममें संहिता की धार्मिकता पूर्णता तक पहुँच जाये।

(रोमियों 7:14-18, 21-25, 8:1-4)

इस तरह संहिता के विधान ने नहीं, बल्कि आत्मा के विधान ने जो येशु मसीह द्वारा जीवन प्रदान करता है, मुझ को पाप तथा मृत्यु की अधीनता से मुक्त कर दिया है। पर इसके लिए हमें येशु मसीह से संयुक्त होना है, जिन्होंने कभी पाप नहीं किया और न उसके व बुराई के अधीन थे, पर ईश्वर (अपने पिता) की आज्ञा (इच्छा) के अधीन थे और जो यह कहते हैं –

"यदि तुम मेरी शिक्षा पर दृढ़ रहोगे तो सचमुच मेरे शिष्य सिद्ध होगे। तुम सत्य को पहचान जाओगे और सत्य तुम्हे स्वतन्त्र बना देगा।".....जो पाप करता हैं, वह पाप का दास है। दास सदा घर में नहीं रहता, पुत्र सदा रहता है। इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र बना देगा, तो तुम सचमुच स्वतन्त्र होगे।

(योहन 8:31-32, 34-36)

हमारी स्वतन्त्रता व पाप–मुक्ति के लिए प्रभु येशु ने स्वंय अपने जीवन की आहुति स्वेच्छा से क्रूस पर दे दी। वे मृतकों मैं से जी उठे और फिर कभी नहीं मरेंगे क्योंकि मृत्यु का उन पर कोई वश नहीं । वह पाप का हिसाब चुकाने के लिए एक बार मर गये और अब वह ईश्वर के लिए ही जीते हैं। आप लोग भी अपने को ऐसा ही समझें–पाप के लिए मरा हुआ और येशु मसीह के लिए जीवित। (जो मर चुका है, वह पाप की गुलामी से मुक्त हो गया है।)

पाप की दासता का परिणाम मृत्यु है, शरीर की अशुद्धता और अधर्म की अधीनता है। पर ईश्वर की दासता का परिणाम जीवन, धार्मिकता और पवित्रता है। आप शरीर की वासनाओं द्वारा संचालित नहीं, बल्कि आत्मा द्वारा संचालित हों। आप अपने अंगो को धार्मिकता का साधन बनने के लिए ईश्वर को सौंप दें। यह समझकर कि आप मृतकों में से पुनर्जीवित हो चुके हैं। आप लोगों पर पाप का कोई अन्धकार नहीं रहेगा। अब आप **संहिता** के नहीं, बल्कि **अनुग्रह** (ईश्वर की कृपा **येशु मसीह**) के अधीन हैं जिससे हमें अनन्त जीवन मिले। **(रोमियों6)** हम प्रभु येशु से सच्ची स्वतन्त्रता प्राप्त करें, जिसमें न कोई भय है, न दण्ड की आशा है, न शंका है और न ही कोई धोखा, झूठ या बुराई।

'जीवन-धाम' के जीवित साक्ष्य

सालों पुराने असह्य पीठ दर्द से मुक्ति मिली

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

मैं, सुरिन्द्र कौर, (चित्र में बायीं ओर) पिछले4 साल से पीठ के दर्द से परेशान थी। यह अचानक ही शुरु हो गई थी और कोई डॉक्टर इस दर्द का कारण ढूँढ ही न पाया। एक्स–रे रिपोर्ट में कुछ पता नहीं चला। 3-4 साल तक मैंने दवाँए लीं। अनेक हड्डी के डॉक्टरों, मालिश करने वालों को दिखाया। थोड़ी राहत मिलती थी पर दवा के बगैर मैं दर्द से तड़पने लगती थी। करीब 50-60 हज़ार रुपये तक मैंने इलाज पर खर्च कर दिये। फिर किसी बहन ने "जीवन–धाम" की चंगाई प्रार्थना के बारे में बताया। मैं एक साल से यहाँ प्रार्थना में शामिल हो रही हूँ और पिछले3 महीने से मैंने दवा लेनी बिल्कुल ही छोड़ दी है क्योंकि प्रभु ने मुझे पीठ दर्द से पूरा छुटकारा दे दिया है। पहले मेरे हाथ मे कई सालो से जो दर्द था वह भी एक ही दिन मैं प्रार्थना के दौरान गायब हो गया। अब मैं उठ–बैठ सकती हूँ व घर के काम कर लेती हूँ। प्रभु येशु को इन कृपाओं के लिए मैं लाखों बार धन्यवाद देती हूँ।

सुरिन्द्र (उम्र 50 वर्ष)

मैं, सर्वेला (उम्र 32 वर्ष), 8 साल से पीठ व कमर दर्द से बहुत परेशान थी। ओखला के ई.एस.आई. अस्पताल में 5 साल तक मैंने इलाज करवाया। डॉक्टर ने यह कह दिया कि यह दर्द कभी नहीं जायेगा। कई दवाँए ली, इन्जेक्शन लिये, एक्स–रे लिए। राहत सिर्फ कुछ ही घण्टों की होती थी। मैं बिल्कुल बिस्तर पर पड़ी रहती थी और इसलिए मेरी बेटी को ही घर का सारा काम करना पड़ता था। पड़ोस में रहने वाली एक बहन ने मुझे चंगाई पाने के लिए "जीवन–धाम" जाने का सुझाव दिया। पहली बार यहाँ आते मुझे दर्द से पूरी राहत मिल गई–यह मेरे जीवन का एक अनोखा चमत्कार था। उस दिन से मैंने दवा लेनी ही छोड़ दी और प्रभु येशु पर पूरा विश्वास किया। आज तीसरी बार यहाँ अपने पर मैं अपनी गवाही बड़े ही आनन्द के साथ दे रही हूँ क्योंकि प्रभु ने मुझे मेरी दुर्बलताओं व पीड़ा से मुक्त कर दिया है जो दवा से सम्भव न हो सका। मैं अब घर का कोई भी काम कर सकती हूँ। आल्लेलूया।

सर्वेला

"यदि मेरा भक्त मेरी दुहाई देगा, तो मैं उसकी सुनूँगा, मैं संकट मैं उसका साथ दूँगा; मैं उसका उद्धार कर उसे महिमान्वित करुँगा।" (स्तोत्र 91:15)

पैशाचिक शक्ति से मुक्ति देते प्रभु येशु

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

मेरा बेटा नानक (उम्र–25 वर्ष) पिछले8 वर्षों से पैशाचिक शक्ति के वश में था। रात को नींद में ही वह उठकर घर से बाहर निकल जाता था, वह अपने आप से बातें करता व हँसता था।

पिछले 20 दिन से वह अपने दाँतों से अपने ही हाथ को काटने लगा था। खून बहुत आता था और पूरे हाथ पर ज़ख्म बन गये थे। उसे रोकना मुश्किल हो गया था। पर उसे न दर्द होता था, न ही उसे कोई अपना ख्याल था। मैं उसे इन सालों में दिल्ली, आगरा, अलीगढ़, बुलन्दशहर इत्यादि जगहों पर इलाज करवा चुकी थी और कम से कम चालीस हज़ार रुपये तक खर्च भी कर डाले। पर उसका मानसिक सन्तुलन बिगड़ता गया। फिर मैं, अशर्फी, उसे यहाँ "जीवन–धाम" में लाने लगी क्योंकि मुझे

"बुराई करने वाले प्रत्येक मनुष्य को-पहले यहूदी और फिर यूनानी को-कष्ट और संकट सहना पडेगा और भलाई करने वाले प्रत्येक मनुष्य को-पहले यहूदी और फिर यूनानी को महिमा, सम्मान और शन्ति मिलेगी, क्योंकि ईश्वर किसी कि साथ पक्षपात नहीं करता।"(रोमियों1:9-10)

विश्वास था कि दवा नहीं, पर प्रभु येशु पर विश्वास कर दुआ करने से ही वह ठीक हो पायेगा। दूसरे इतवार से प्रभु येशु की अद्भुत शक्ति व कृपा से उसने स्वंय को काट खाना बंद कर दिया। उसने अपनी खोयी सुध–बुध भी वापिस पा ली है। अब उसके ज़ख्म भी भर गये हैं और उसे पैशाचिक बन्धन से पूर्ण मुक्ति भी मिल गई है।

प्रभु येशु ने कहा, "यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र कर देगा, तो तुम सचमुच स्वतन्त्र होगे।"(योहन 8:36)

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

6) लूकस रचित सुसमाचार
c) अध्याय 8-10

प्रस्तुत प्रश्न ***सन्त लूकस*** के सुसमाचार के अध्याय ***8 से 10*** तक से बनाये गये हैं जिनके सही उत्तरों को आप ने दिये गये उत्तरों से ***(क, ख, ग और घ)*** चुनकर हमें लिख भेजना है। कुछ प्रश्नों के एक से भी ज्यादा सही उत्तर हो सकते हैं। साथ ही सही उत्तर देने वाली वाक्यांशों की भी संख्या अध्याय सहित बतायें।

1) प्रभु येशु ने बहत्तर शिष्यों को अपने आगे भेजने से पहले इन में से क्या–क्या निर्देश नहीं दिये?
क) जिस घर में ठहरो, वहाँ से कुछ भी न खाओ–पियो।
ख) पसन्द न आने पर घर बदलते जाओ।
ग) जिस नगर में तुम्हारा स्वागत हो, वहाँ के रोगियों को चंगा करो।
घ) रास्ते में मिलने वाले लोगों को नमस्कार ज़रुर करो।

2) प्रभु के रुपान्तरण के समय पर प्रभु के साथ इनमें से कौन उपस्थित थे ?
क) पेत्रुस ख) याकूब और योहन
ग) मूसा और एलियस घ) यूदस और अन्द्रेयस

3) बीज बोने वाले के दृष्टान्त में भूमि, काँटे, बीज और पक्षी क्या–क्या हैं?
क) लोग, चिन्ता और धन–सम्पत्ति, विश्वास, शैतान
ख) हृदय, चिन्ता और धन–सम्पत्ति, वचन, शैतान
ग) विश्वासी, प्रलोभन, वचन, इंसान
घ) लोग, चिन्ता और धन–सम्पत्ति, वचन, शैतान

4) बारहों को भेजने से पहले उन्हें येशु ने क्या–क्या न ले जाने को कहा?
क) एक कुरता ख) लाठी, झोली
ग) चादर, चप्पल घ) रोटी, रुपया

5) इन में से किन नगरों को प्रभु ने अविश्वास के कारण धिक्कारा ?
क) कफरनाहूम ख) नाज़रेत
ग) तीरुस और सीदोन घ) खोराज़िन, बेथसाइदा

6) इन में से किन लोगों को प्रभु ने किस घटना के विषय में किसी से न कहने को कहा ?
क) गेरासा का अपदूतग्रस्त, अपनी चंगाई का अनुभव
ख) जैरुस और उसकी पत्नी, जैरुस की बेटी की जिलाने की चर्चा
ग) (बारह) शिष्य, कि येशु ईश्वर के मसीह हैं।
घ) बारह शिष्य, अपने दुःखभोग की भविष्यवाणी।

5) रोटियों के चमत्कार में कितनी रोटियों से कितने पुरुषों को खिलाया गया और बचे हुओं से कितने टोकरे भर गये? उन्हें कैसे बैठाया था ?
क) पाँच रोटियों से पाँच हज़ार, बारह , पचास–पचास करके
ख) दो रोटियों से पाँच हज़ार, बारह, सौ–सौ करके
ग) सात रोटियों से चार हज़ार, पचास–पचास करके
घ) पाँच रोटियों से दस हज़ार, बारह, पचास–सौ करके।

8) अशुद्ध आत्मा लगने पर गेरासा का मनुष्य क्या–क्या करता था ?
क) वह घर में रहता था पर शोर मचाता था
ख) वह कपड़े नहीं पहनता था।
ग) वह निर्जन स्थानों में चला जाता था।
घ) वह ज़ंजीरों और बेड़ियों को तोड़ देता था।

6) लूकस रचित सुसमाचार
b) अध्याय 4-7

1) क) ग) और घ) (6:24-25)
2) ख) और घ) (4:38-39, 6:8-10)
3) क) (5:1, 10)
4) ख) और ग) (7:37-38, 44-46)
5) क), ख) और ग) (6:20-21)
6) ख) और ग) (5:30; 7:34)
7) ख) (4:1-13)
8) ग) (6:13-16)

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – ***जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।***
ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सहित) क्रमानुसार होने चाहिएँ।
ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।
घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।
ङ) सहीं उत्तरों से मिलाने के लिए अपने उत्तरों की एक प्रति अपने पास भी रखें।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित.....हैं ?
क्या आप दुःखी.....हैं ?
क्या आप रोगी.....हैं ?
क्या आप के मन में अशान्ति.....है ?

आपको सांत्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्तोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः9.00 बजे से12.30 बजे तक 'जीवन-धाम'696/22, फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर यीशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

"...न्याय का समय प्रारम्भ हो रहा है। वह ईश्वर के निजी घराने से प्रारम्भ हो रहा है।" (1पेत्रुस4:17)

Edited & Published by JEEVAN DHAM, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.